DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY CONCEPT :PROJECTIVE METHODS
LECTURE-54

प्रक्षेपीय विधियाँ(PROJECTIVE METHODS)

(ख)संरचना परीक्षण (construction test) –इस श्रेणी में वैसे प्रक्षेपीय परीक्षणों को रखा जाता है जिसमें परीक्षण उद्दीपको (test stimul) के आधार पर व्यक्ति को एक कहानी या अन्य समान चीजो की संरचना करनी होती है |इस श्रेणी का सबसे प्रमुख परीक्षण विषय –आत्म –बोधन परीक्षण (thematic apperception test or TAT)है |इस परीक्षण का निर्माण मर्रे (1935) ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में किया |बाद में यानी ,1938 में मॉर्गन के साथ मिलकर इन्होंने इस परीक्षण का संशोधन किया |इस परीक्षण में रोशार्क परीक्षण के समान

उद्दीपक या परिस्थिति बहुत ही अस्पष्ट तथा असंगठित नहीं होती है |इस परीक्षण का उद्दीपक या परिस्थिति तुलनात्मक रूप से अधिक स्पष्ट होती है |इस अर्थ में TAT ,रोशार्क परीक्षण से भिन्न है |इस परीक्षण में कुल 31 कार्ड होते है जिसमें से 30 कार्ड पर चित्र बने होते है तथा 1 कार्ड सादा होता है |जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व को मापना होता है ,उसके यौन (SEX) एवं उम्र के अनुसार इस 31 कार्ड में से 20 कार्ड का चयन कर लिया जाता है |इस 20 कार्ड में 19 कार्ड पर चित्र अंकित होते है और एक कार्ड सादा होता है |किसी एक व्यक्ति पर 20 कार्ड से अधिक नहीं दिया जाता है |प्रत्येक कार्ड के चित्र के आधार पर व्यक्ति जिसका व्यक्तित्व मापन किया जाता है ,एक कहानी तैयार करता है जिसमें चित्र से संबंधित घटना के भूत ,वर्तमान तथा भविष्य तीनों का वर्णन होता है |

कहानी –लेखन का कार्य समाप्त होने पर उसका विश्लेषण कर व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण आवश्यकताओं का पता लगाया जाता है|मर्रे के अनुसार इस परिक्षण का विश्लेषण निम्नांकित प्रसंगों में किया जाता है |

(I) नायक (HERO)-प्रत्येक कहानी में नायक या नायिका का पता लगाया जाता है | कहानी में जिस व्यक्ति की मुख्य भूमिका होती है ,उसे नायक या नायिका के

साथ आत्मीकरण स्थापित कर अपने व्यक्तित्व के शीलगुणों विशेषकर अपनी महत्वपूर्ण आवश्यताओं को दिखलाता है |

(II) आवश्यकता (NEEDS)-प्रत्येक कहानी में नायक या नायिका की मुख्य आवश्यकताएँ क्या-क्या है ,उसका पता लगाया जाता है |मर्रे के अनुसार TAT द्वारा 28 मानव आवश्यकताओ का मापन होता है |कुछ ऐसी आवश्यकताएँ है –उपलब्धि आवश्यकता ,संबंधन आवश्यकता ,प्रभुत्व आवश्यकता आदि |

(III) प्रेस (PRESS)- प्रेस से तात्पर्य कहानी के उस वातावरण-सम्बन्धी बालो से होता है जिनसे कहानी के नायक की आवश्यकता या तो पूरी होती है या पूरी होने से वंचित रह जाती है |मर्रे के अनुसार आक्रमकता तथा शारीरिक खतरा दो महत्वपूर्ण प्रेस है जिसका वर्णन अधिकांश कहानियों में मिलता है |

(IV) थीमा (THEMA)-प्रत्येक कहानी में थीमा का निर्धारण किया जाता है | थीमा से तात्पर्य नायक की आवश्यकता तथा प्रेस अर्थात वातावरण-सम्बन्धी बल से हुई अंतःक्रिया से उत्पन्न घटना से होता है |थीमा द्वारा व्यक्तित्व में निरंतरता का ज्ञान होता है |

(V) परिणाम (OUTCOME)-परिणाम से तात्पर्य इस बात से होता है की कहानी को किस तरह से समाप्त किया गया है |कहानी का निष्कर्ष निश्चित या अनिश्चित है| निश्चित एवं स्पष्ट निष्कर्ष होने से व्यक्ति में परिपक्वता तथा वास्तविकता का ज्ञान होने का बोध होता है | TAT का हिंदी अनुकूलन कलकत्ता के प्रो० उमा चौधरी ने किया है जिसका उपयोग भारतीय सन्दर्भ में अधिक किया जा रहा है |इस श्रेणी में TAT के सामान अन्य कुछ परीक्षणों का भी निर्माण किया गया है जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नांकित है –

(A) बाल आत्मबोधन परीक्षण (CHILDREN'S APPERECEPTION TEST OR CAT)-इस परीक्षण का विकास बेल्लाक (1954) द्वारा किया गया है तथा इसके कार्ड में पशु पात्र है न की मानव पात्र | TAT के समान ही इसमें बच्चों के व्यक्तित्व की आवश्यकता का मापन प्रत्येक कार्ड के आधार पर लिखी गयी कहानी के माध्यम से होता है |

(B) रोजेनविग तस्वीर –कुंठा अध्ययन (ROSENVIG PICTURE –FRUSTRATION STUDY)-इस परीक्षण का निर्माण रोजेनविग (1949) द्वारा किया गया |इसमें 24 कार्टून होते है जिसमे एक व्यक्ति को दुसरे व्यक्ति के साथ इस

ढंग से व्यवहार करते दिखलाया जाता है की दूसरा व्यक्ति में उसके व्यवहार से निश्चित रूप से कुंठा उत्पन्न हो |यहाँ व्यक्ति को प्रत्येक कार्टून देखकर यह बतलाना होता है की ऐसी परिस्थिति में कुंठित व्यक्ति की अनुक्रिया क्या होगी |

(C) रोबर्टस आत्मबोधन परीक्षण :बच्चो के लिए (ROBERTS APPRECEPTION TEST FOR CHILDREN OR RATC)-इस परीक्षण का निर्माण मैकआर्थर तथा रोबर्टस(1982) द्वारा किया गया |इसमें 27 कार्ड होते है और प्रत्येक कार्ड में कुछ बच्चो को अन्य बच्चों या कारकों के साथ अन्तःक्रिया करते हुए दिखलाया जाता है |

(D) वरिष्ठ आत्मबोधन परीक्षण (SENIOR APPERCEPTION TEST OR SAT)-इस परीक्षण का निर्माण वेल्लाक द्वारा किया गया है जिसके माध्यम से 50 साल या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों का व्यक्तित्व का मापन होता है |भारत में इस परीक्षण का अनुकूलन प्रो० उमा चौधरी द्वारा किया गया है |इस परीक्षण के कार्डो में बुजुर्ग व्यक्तियों तथा उनसे सम्बंधित विषयों जैसे निर्भरता तथा अकेलापन को दिखलाया गया है |इसके द्वारा

व्यवहार विकृति तथा व्यक्तित्व गतिकी का मापन होता है |

(ग) पूर्ति परीक्षण (COMPLETION TESTS)-इस श्रेणी के प्रक्षेपीय परीक्षण में व्यक्ति को उद्दीपक (प्रायः एक वाक्य) का एक हिस्सा दिखलाया जाता है और दूसरा हिस्सा खाली होता है जिसकी पूर्ति व्यक्ति अपनी इच्छानुसार करता है |यहाँ पूर्वकल्पना यह होती है की जिस तरह से व्यक्ति वाक्य को पूरा करेगा,उससे उसके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण विमाओं का पता चलेगा |इस तरह के परीक्षण को वाक्य-पूर्ति परीक्षण कहा जाता है |

(घ) चयन या क्रम परीक्षण (CHOICE OR ORDERING TEST)- इस श्रेणी के परीक्षण में व्यक्ति परीक्षण उद्दीपको को एक विशेष क्रम में सुव्यवस्थित करता है या अपनी पसंद या आकर्षकता या अन्य कोई विमा के आधार पर दिए गए परीक्षण उद्दीपकों में से उसे कुछ को चुनना होता है |जोन्डी परीक्षण जिसका निर्माण जोन्डी द्वारा किया गया था ,इस श्रेणी का एक प्रमुख परीक्षण है |इस परीक्षण में व्यक्ति को कई फोटोग्राफ के छह समूहों को एक एक करके दिखलाया जाता है जिसमे से उसे दो ऐसे तस्वीर को चुनना होता है जिसे वह अधिक पसंद करता है तथा दो ऐसे तस्वीर को भी चुनना होता है जिसे वह सबसे अधिक नापसंद

करता है |ऐसे चयन से व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में अनुमान लगाया जाता है |

(ङ) अभिव्यंजक परीक्षण (EXPRESSIVE TESTS)-इस श्रेणी के प्रक्षेपीय परीक्षण में व्यक्ति को अपने आप को अभिव्यक्ति करने का मौका दिया जाता है |प्रायः यह अभिव्यक्ति उसे एक तस्वीर का आरेखण करके करना होता है |

इस श्रेणी के मुख्य दो परीक्षण है –ड्रा-ए-परसन परीक्षण(DRAW-A-PERSON-TEST OR DAP) तथा घर-पेड़-व्यक्ति परीक्षण (HOUSE-TREE-PERSON TEST OR H-T-D) |

DAP का निर्माण मैकोबर (1949) द्वारा किया गया है जिसमे व्यक्ति को एक व्यक्ति के चित्र का आरेखण करना होता है| कभी-कभी इसके बाद उसके विपरीत लिंग के व्यक्ति आत्मन ,माँ ,परिवार के चित्र का भी आरेखण करने के लिए कहा जाता है |

घर-पेड़-व्यक्ति परीक्षण का निर्माण बक (1948)द्वारा किया गया |व्यक्ति को इसमें एक पेड़ तथा एक व्यक्ति के चित्र का आरेखण करना होता है और फिर उसकी विवेचना एक साक्षात्कार में करनी होती है | इस विवेचन के आधार पर उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती है |

यद्दपि प्रक्षेपीय परीक्षण व्यक्तित्व को मापने की एक महत्वपूर्ण विधि है ,फिर भी मनोवैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना की है | आइजेन्क (1959)द्वारा प्रक्षेपण परीक्षण की मुख्य आलोचनाएँ इस प्रकार की गयी है |

(I) प्रक्षेपीय परीक्षण का आधार कोई अर्थपूर्ण तथा परीक्षणीय सिद्धांत नहीं है |फलतः इसके द्वारा किये गये व्यक्तित्व मापन से कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकलता है |

(II) प्रक्षेपीय परीक्षणो का प्राप्तांक-लेखन तथा व्याख्या काफी आत्मनिष्ठ है |

(III) प्रक्षेपीय परीक्षण की वैधता अधिक नहीं होती है |

(IV) अधिकतर मनश्चिकित्सकों का ऐसा विश्वास है की प्रक्षेपीय परीक्षण के सूचकों तथा शीलगुणों के बीच प्रत्याशित सम्बन्ध होने का कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है |

इन आलोचनाओं के बावजूद भी प्रक्षेपीय परीक्षण का प्रयोग व्यक्तित्व मापन में काफी होता है और मनोचिकित्सा में तो इस परीक्षण को एक अभिन्न अंग माना गया है |